12

भाषा शिक्षण एवं बहुभाषिकता पर शिक्षक-प्रशिक्षकों का दृष्टिकोण एक अध्ययन

गीतांजली*

प्रस्तुत लेख भाषा शिक्षक-प्रशिक्षकों के भाषा शिक्षा एवं बहुभाषिकता के प्रति दृष्टिकोण पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। पूर्व सेवाकालीन शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाषा शिक्षाशास्त्र की क्या स्थिति है, विशेष रूप से हिंदी भाषा के संदर्भ में यह जानने का प्रयास किया गया है। दिल्ली के छ: डाइट (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान) में हिंदी भाषा में शिक्षाशास्त्र पढ़ा रहे प्रशिक्षकों से साक्षात्कार के द्वारा उनके दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया कि वर्तमान भाषा पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण पर वह क्या सोचते हैं एवं क्या चुनौतियाँ उनके समक्ष हैं? शिक्षण विधियों एवं सामग्री, प्राथमिक कक्षाओं में भाषा में मूल्यांकन और बहुभाषिकता के प्रति संवेदनशीलता एवं उपयुक्त शिक्षण युक्तियों आदि पर सभी प्रशिक्षकों ने अपने अनुभव एवं दृष्टिकोण साझा किए। यदि हम चाहते हैं कि एक संवेदनशील एवं योग्य भाषा शिक्षक जो कि प्राथमिक कक्षाओं में उपयुक्त गतिविधियों एवं वातावरण द्वारा बच्चों में भाषा कौशलों का विकास करें एवं कक्षा में भाग लने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें अत: यह आवश्यक है कि एक भाषा शिक्षक-प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षुओं को ऐसा प्रशिक्षण दें कि वह एक योग्य एवं विशेषज्ञ शिक्षक बन सकें।

एक संवेदनशील एवं विषय विशेषज्ञ शिक्षक बनने में बहुत बड़ी भूमिका प्रशिक्षण काल के दौरान लिए गए प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षकों के साथ प्रशिक्षुओं की अंतर्क्रिया की होती है। भावी शिक्षकों के जीवन एवं प्रशिक्षण काल में शिक्षक-प्रशिक्षक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह वर्तमान समय में चल रहे शैक्षिक संवादों, परिस्थितियों एवं चुनौतियों से प्रशिक्षुओं को अवगत कराते हैं। यदि भाषा शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में देखें तो भाषा संबंधी संकल्पनाओं एवं मुद्दों पर एक विस्तृत समझ बनाने के लिए प्रशिक्षक ही प्रशिक्षुओं को तैयार करते हैं। तभी प्रशिक्षु प्रशिक्षण कार्यक्रम में आने से पहले ही विषयों की आधारभूत समझ रखते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हिंदी भाषा की बात करें तो हिंदी भाषा के संरचनात्मक ज्ञान एवं कौशलों में प्रशिक्षु निपुण होते हैं, यदि उन्हें आवश्यकता होती है तो केवल भाषा

* *शोधार्थी* (एम.फ़िल), केंद्रीय शिक्षण संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शिक्षण विधियों एवं भाषा संबंधी संवेदनशील मुद्दों को जानने की और यहीं पर एक भाषा शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। भाषा प्रशिक्षण में केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही महत्वपूर्ण नहीं होता कि प्रशिक्षुओं को केवल भाषा की संरचना एवं व्याकरण बता दी जाए या केवल भाषा साहित्य से परिचित करा दिया जाए, अपितु बहुभाषी कक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण एवं संवेदनशीलता, भाषा में जेंडर संबंधी मुद्दों आदि पर भी एक समझ का विकास आवश्यक है। भाषा एक ऐसा उपकरण है, जो अन्य विषयों को समझने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है इसलिए एक और प्रभावी भाषा शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन में भी प्रशिक्षकों से इसी संदर्भ में अनुभव एवं प्रतिक्रियाएँ ली गईं कि वे भाषा शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में क्या सोचते हैं। चूँकि, अभी हाल में डाइट (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों) के पाठ्यक्रम में बदलाव भी किया गया है और उसे अधिक विस्तृत एवं विशद बनाया गया है तो नवीन पाठ्यक्रम से प्रशिक्षण में कितनी गुणवत्ता आई है।

लेखक ने जब इस अध्ययन से संबंधित पूर्व अध्ययनों एवं शैक्षिक दस्तावेज़ों का अध्ययन किया तो उनमें स्पष्ट रूप से निकल कर आ रहा था कि प्राथमिक कक्षा में भाषा पढ़ाते समय शिक्षकों के लिए मुख्य उद्देश्य केवल अक्षरों की ध्वनियों की पहचान एवं शुद्ध रूप में बोलना होता है। अक्षरों को साफ़-साफ़ लिख पाना उनका एक अन्य मुख्य उद्देश्य होता है। बहुत कम शिक्षक भाषा को संप्रेषण के माध्यम के रूप में एवं विचारों के आदान-प्रदान के उपकरण के रूप में देखते एवं स्वीकारते हैं (द्विवेदी, 2009)। 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण' *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र* (2009) भी विद्यालयों में भाषा शिक्षण पर प्रकाश डालता है। विद्यालयों में भाषा शिक्षण के दौरान बच्चे की भाषा एवं कक्षा में कोई संबंध नहीं बन पाता है।

राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र (2009) 'शिक्षक शिक्षा' में भी ऐसे शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रस्ताव रखा गया है जिनमें प्रशिक्षुओं को एक ऐसा शिक्षक बनने का अवसर प्रदान हों कि वह अपने विद्यार्थियों के प्रति संवेदनशील हों, उनके साथ जुड़ें, बातचीत करें और अवलोकन करें।

ये सभी बिंदु एक आदर्श पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम में होने चाहिए और प्रस्तुत अध्ययन में भी इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षकों से प्रतिक्रियाएँ ली गई हैं।

प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अंतर्गत आने वाले छ: जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में भाषा शिक्षाशास्त्र पढ़ा रहे शिक्षक-प्रशिक्षकों से साक्षात्कार के माध्यम से प्रतिक्रियाएँ ली गईं। सभी प्रशिक्षक हिंदी भाषा के विशेषज्ञ एवं प्रशिक्षक थे। प्रशिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन चार श्रेणियों के अंतर्गत किया गया।

भाषा शिक्षण के उपागमों में आने वाले नवीन परिवर्तन

प्रशिक्षकों के अनुसार पाठ्यक्रम अब अधिक गतिविधि आधारित हो गया है और शिक्षण के समय तकनीकी उपकरणों जैसे पी.पी.टी. एवं प्रोजेक्टर

इत्यादि का प्रयोग वह भाषा शिक्षण में करते हैं, परंतु पाठ्यक्रम बहुत अधिक विस्तृत कर दिया गया और समय के अभाव के कारण वह बहुत अधिक गतिविधियाँ या चर्चाएँ एवं गोष्ठियाँ आयोजित नहीं करते हैं। प्रशिक्षकों ने कहा कि वह अभी भी सबसे अधिक व्याख्यान विधि पर ही अधिक निर्भर हैं, चूँकि समय का अभाव है। प्रतिक्रियाओं में यह भी निकल कर आया कि प्रशिक्षक भाषा के संरचनात्मक रूप, व्याकरण शिक्षण, अक्षरों एवं स्वरों के ज्ञान पर अधिक बल देते हैं। प्रशिक्षकों ने कहा कि पाठ्यक्रम में साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं पर आधारित विषयवस्तु बहुत जटिल है जो कि प्रशिक्षुओं के लिए निरर्थक है।

एक बहुभाषी कक्षा

एक बहुभाषी कक्षा के विषय पर प्रशिक्षकों ने प्रतिक्रियाएँ दीं कि वह इसे एक संवेदनशील मुद्दा मानते हैं और चाहते हैं कि प्रशिक्षु भी इसकी प्रशंसा करें। परंतु अपनी कक्षा में वह बहुभाषिकता पर बहुत अधिक चर्चा नहीं करते हैं न ही बहुभाषी कक्षा के लिए उपयुक्त युक्तियों पर चर्चा करते हैं। कुछ प्रशिक्षक स्वयं भी प्रभावी युक्तियाँ साक्षात्कार के दौरान नहीं बता पाए। वह केवल पारिभाषिक रूप में बहुभाषिकता की व्याख्या कर पाए।

भाषा शिक्षण में परियोजना कार्यों पर प्रशिक्षकों का दृष्टिकोण

परियोजना कार्य एवं व्यावहारिक गतिविधियाँ शिक्षण एवं कक्षा को अधिक विस्तृत रूप में समझने एवं टटोलने का अवसर देते हैं। परियोजना कार्यों के माध्यम से प्रशिक्षु वास्तविक कक्षा परिस्थितियों, भाषा संबंधी त्रुटियों के कारणों एवं बहुभाषिकता जैसे मुद्दों को समझ पाते हैं तथा उनके उपाय खोज पाते हैं। इन सभी परिस्थितियों के लिए प्रशिक्षण के उपरांत जब वह शिक्षक के रूप में कक्षा में जाएँगे तो उनमें प्रवीणता आ चुकी होगी। परंतु प्रशिक्षकों ने कहा कि शोध संबंधी कोई भी परियोजना कार्य पाठ्यक्रम में नहीं दिया गया है। कुछ पुस्तकों का विश्लेषण अवश्य है। पुस्तकों का चुनाव भी प्रशिक्षक करते हैं तथा प्रशिक्षुओं को उनका विश्लेषण करना होता है जैसे प्रेमचंद के उपन्यास का साहित्यिक विश्लेषण करना आदि।

भाषा की कक्षा की परिस्थितियों पर कोई क्रियात्मक शोध इत्यादि या अन्य परियोजना कार्य नहीं दिया गया है। प्रशिक्षकों ने कहा चूँकि पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत है और समय सीमा बहुत कम है, तो वह स्वयं भी इस प्रकार के परियोजना कार्य प्रशिक्षुओं को करने के लिए नहीं दे पाते हैं।

भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों पर प्रशिक्षकों की प्रतिक्रिया

भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रशिक्षकों ने कहा कि यदि हिंदी भाषा शिक्षण की चर्चा करें तो प्रशिक्षु बहुत इच्छुक नहीं है हिंदी पढ़ने में और कार्यक्रम के द्वितीय वर्ष में जब भाषा चुनाव की बात आती है तो केवल वही प्रशिक्षु हिंदी भाषा का चुनाव करते हैं जिनका स्वयं का विद्यालय में शिक्षा के दौरान माध्यम हिंदी था। हिंदी भाषा की सामाजिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है क्योंकि बाज़ार में नौकरियों

के अवसर भी अंग्रेज़ी भाषियों के लिए अधिक हैं। इसलिए प्रशिक्षु भी हिंदी पढ़ना नहीं चाहते हैं।

निष्कर्ष

यदि हम भाषा शिक्षाशास्त्र एवं शिक्षण पर भाषा शिक्षक-प्रशिक्षकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करते हैं तो देखते हैं कि पाठ्यक्रम में बदलाव के बाद भी परिस्थितियों में बहुत अधिक बदलाव नहीं आया है अर्थात् समय की कमी एवं स्वयं प्रशिक्षकों के पारंपरिक ढाँचों पर चलने के कारण प्रभावी प्रशिक्षण क्रियान्वित नहीं हो पा रहा है हालाँकि प्रशिक्षक प्रयास कर रहे हैं कि वह प्रशिक्षुओं को गतिविधि-आधारित भाषा शिक्षण में निपुण बनाएँ एवं बहुभाषिकता के प्रति संवेदनशीलता लाएँ परंतु पूर्ण रूप से यह संभव नहीं हो पा रहा है। इसलिए आवश्यक है कि प्रशिक्षकों को भी नवीन उपागमों एवं शिक्षण विधियों से परिचित करवाया जाए। ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए जिनमें भाषा संबंधी व्यावहारिक मुद्दों पर चर्चा हो तथा युक्तियों या निर्माण हो जिनका लाभ भाषा शिक्षक-प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षु दोनों को प्राप्त हो।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2009. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र.* 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण', एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

———. 2009. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र.* 'शिक्षक शिक्षा', एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

द्विवेदी, रजनी एवं शोभा शंकर नागड़ा. 2009. 'व्हाट टू टीचर्स थिंक ऑफ़ लैग्वेज टीचिंग?'. *लर्निंग कर्व.* तेरहवां अंक. अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, बेंगलुरु.